भारत के आर्थिक विकास में प्राथमिक शिक्षा का महत्त्व

डॉ0 उदय शंकर सत्यार्थी

प्राथमिक शिक्षा ऐसी शक्ति है जो व्यक्ति, परिवार और समाज के उत्थान में एक साथ उपयोगी भूमिका निभाती है। प्राथमिक शिक्षा न केवल हमारे नैतिक विकास में मददगार होती है बल्कि हमारी भौतिक और आर्थिक प्रगति के लिए भी जरूरी है। हमारे पूर्वज भी शिक्षा के महत्व को भली प्रकार समझते थे, लेकिन कुछ कारणों से देश प्राथमिक शिक्षा के महत्व को भूलता गया है। धीरे–धीरे शिक्षा केवल कुलीन और उच्च वर्ग तक सीमित हो गई। ज्ञान सूर्य की तरह सर्वव्यापी न होकर दीपक की तरह अल्पव्यापी हो गया। ब्रिटिश सरकार का उद्येश्य अपनी आवश्यकता के लिए बाबू तैयार करना था किन्तु प्राथमिक शिक्षा स्वयं में प्रकाशमयी है। इसलिए शिक्षित होने वाले भारतीयों ने बाहरी परिवेश के साथ–साथ अपने अन्दर झांकना शुरू किया तो उन्हें ज्ञान का महत्व समझ में आया औंर उनमें से बहुत से लोग ब्रिटिश शासन की सेवा करने के बजाय अपने देश को आजाद करने और यहॉ के लोगों को जागरूक बनाने की चिन्ता करने लगे। एक दीप से दूसरा दीप जलता गया और शिक्षा तंत्र सरकारी सीमाओं को लांधकर सामुदायिक व निजी संस्थाओं के हाथ में आ गया। एक प्रकार से प्राथमिक शिक्षा का लोकतंत्रींकरण हो गया। ब्रिटिश शिक्षा पद्धति से निकले वकीलों, शिक्षको, व्यापारियों और डॉक्टरो ने विदेशी शासन के खिलाफ झंडाउठा लिया। स्वदेशी सरकार ने शिक्षा को अपनी प्राथमिकताओं में शामिल किया और शहरों के साथ–साथ गॉवों में शिक्षा के प्रसार की योजनाऍ शुरू की।